प्रातः क्लास 23/11/68 ओम शांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शांति। रोज़ बच्चों को कहना पड़ता है कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझा रहे हैं। ऐसा क्यों कहते हैं कि बच्चे अपन को आत्मा समझे। बच्चों को यह याद पड़े बरोबर बेहद का बाप हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। सर्विस के लिए भी भिन्न-2 प्वाइंट्स पर समझाते हैं। बच्चे कहते हैं सर्विस नहीं है, हम बाहर में सर्विस कैसे करें? बाप सर्विस की युक्तियाँ तो बहुत ही सहज बताते हैं। अभी जैसे रघुनाथ का मंदिर है, वहाँ भी सर्विस कर सकते हो। चित्र हाथ में हो। रघुनाथ का काला चित्र भी हो, गोरा चित्र भी हो। नारायण का भी ऐसे। गोरा भी हो, काला भी हो। कृष्ण का भी ऐसे। शिवबाबा का भी गोरा चित्र भी हो, काला चित्र भी हो। भल छोटे चित्र ही हों। कृष्ण का इतना छोटा चित्र भी बनाते हैं। तुम मंदिर के पुजारी से पूछ सकते हो इनको काला क्यों बनाया है, जबकि असल में गोरा था? वास्तव में शरीर तो काला नहीं होता है। तुम्हारे पास बहुत अच्छे-2 गोरे भी रहते हैं; परंतु इनको काला क्यों बनाया है? यह तो तुम बच्चों को समझाया है। नारायण कोई काला नहीं बनता। उनको तो महाराजा श्री ना॰ कहा जाता है। यह समझाया जाता है आत्मा कैसे भिन्न-2 नाम-रूप धारण करते-2 नीचे उतरती है। जब से काम चिक्षा पर चढ़ते हैं तब से ही काला बनते हैं; परंतु उस समय तो नाम-रूप वही श्री ना॰ का नहीं है ना। रामचंद्र को भी ऐसा काला दिखाते हैं। गोया राम की यह इनसल्ट करते हैं। वह तो राजा था, उनको काला करना यह तो इनसल्ट है। ऐसे ही इनसल्ट शिवबाबा की भी करते हैं। श्री ना॰ की भी करते हैं और कृष्ण की भी करते हैं। मुख्य है ही यह। जगतनाथ वा श्रीनाथ द्वार में भी जाना तो है ना बच्चों को। वहाँ ढेर यात्रु होते हैं। तुमको निमंत्रण भी करते हैं। बोलो, हम श्रीनाथ की जीवन कहानी 84 जन्मों की सुनाते हैं। भाइयों और बहनों आकर सुनो। ऐसा भाषण और तो कोई कर न सके। तुम समझा सकते हो यह काला क्यों बने हैं। 84 जन्म तो हरेक मनुष्य, चाहे देवता हो, चाहे असुर हो, 84 जन्म तो लेते ही हैं। पावन से पतित ज़रूर बनते हैं। यह पावन थे फिर वाममार्ग में गये तो उनको काला कर दिया है। काम चिक्षा पर बैठने से आयरन एज्ड बन जाते हैं। आयरन का रंग काला होता है। सोने का गोल्डन होता है। उनको कहेंगे गोरा। वही फिर 84 जन्मों के बाद काला बनते हैं। सीढ़ी का चित्र भी ज़रूर हाथ में हो। सीढ़ी भी बड़ी हो जो कोई भी दूर से देख सकेंगे अच्छी रीत और तुम समझावेंगे कि अभी भारत की यह गति है। लिखा हुआ भी है उत्थान और पतन। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। समझाना है यह दुनिया का चक्र कैसे फिरता है। गोल्डन एज, सिलवर एज, कॉपर, आयरन। फिर यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी दिखाना है। भल बहुत चित्र न उठाओ। सीढ़ी का चित्र तो मुख्य है भारत के लिए। तुम समझा सकते हो अभी फिर से पतित से पावन तुम कैसे बन सकते हो। पतित पावन तो एक ही बाप है। उनको याद करने से सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है। तुम बच्चों में यह सारा ज्ञान है। अज्ञान तो सभी है। अज्ञान नींद में सभी सोये हुये हैं। भारत ज्ञान में था तो बहुत धनवान था। अभी भारत अज्ञान में है। कितना कंगाल है। ज्ञानी मनुष्य और अज्ञानी मनुष्य होते हैं ना। ज्ञानी मनुष्य को देवता, अज्ञानी मनुष्य को असुर कहना पड़े। देवी-देवता और मनुष्य तो नामी-गिरामी हैं। देवी-देवताओं का राज्य सतयुग-त्रेता में होता है। मनुष्यों का होता है द्वापर-कलियुग में। यह बच्चों की बुद्धि में सदैव रहना चाहिए। सर्विस कैसे करो वह भी बाप समझाते रहते हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्र आधा कल्प से पढ़ते आये, फायदा तो कुछ भी नहीं हुआ। पढ़ते-2 और ही नीचे गिरे हैं। भल कितने भी बड़े-2 विद्वान-आचार्य हैं, इस सन्यास धर्म को। 500 वर्ष हुये हैं नीचे ही उतरते आये हैं। सीढ़ी का चित्र समझाने लिए बहुत ही अच्छा है। बाप कहते हैं भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, शरीर निर्वाह लिए धंधा आदि भी तो करना ही है। जिस्मानी विद्या भी पढ़नी है। बाकी जो टाइम मिले तो सर्विस के लिए ख्याल करना चाहिए, हम औरों का कल्याण कैसे करें। यहाँ तो तुम बहुतों का कल्याण नहीं कर सकते हो। यहाँ तो आते ही हो बाप की मुरली सुनने। इसमें ही जादू है। बाप को जादूगर भी कहते हैं ना। गाते भी हैं मुरली तेरी में जादू

है। तुम्हारे मुख से जो मुरली बजती है उसमें जादू है, मनुष्य से देवता बन जाते हैं। ऐसा कोई जादूगर होता नहीं सिवाय बाप के। गाते भी हैं मनुष्य से देवता किये करत न लागे वार। पुरानी दुनिया से नई होती ज़रूर है। पुरानी का विनाश भी ज़रूर होना है। इस समय ही तुम राजयोग सीखते हो तो ज़रूर राजा भी बनना है। अभी तुम बच्चे समझते हो 84 जन्मों के बाद फिर पहला नम्बर जन्म चाहिए; क्योंकि वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होती है। सतयुग-त्रेता..... जो भी होकर गया है सो फिर रिपीट होना है जरूर। यहाँ तुम बैठे हो तो अभी में यह याद करना है कि हम वापस जाते हैं। फिर सतोप्रधान देवी-देवता बनते हैं। इस समय हम तमोप्रधान हैं। मनुष्य तो मनुष्य ही हैं; परंतु दैवी गुण धारण करने से, सतोप्रधान बनने से उनको देवता कहा जाता है। अभी मुनष्यों में दैवीगुण नहीं है। तो सर्विस तुम कहाँ भी कर सकते हो। कितना भी धंधा आदि वाला हो गृहस्थ व्यवहार में रहते यह कमाई भी करनी है। इसमें मुख्य बात है पवित्रता की। प्युरिटी है, तो पीस–प्रॉसपेरिटी भी है। कम्पलीट प्योर बन गये तो फिर यहाँ नहीं रह सकते; क्योंकि हमको शांतिधाम ज़रूर जाना है। आत्मा पवित्र बन गई तो फिर आत्मा को इस पुरानी शरीर के साथ नहीं रहना है। यह तो अपवित्र है ना। 5 तत्व ही अपवित्र है। शरीर भी इनसे ही बनते हैं। इनको मिट्टी का पुतला कहा जाता है। 5 तत्वों का शरीर एक खलास होता है दूसरा बनता है। आत्मा तो है ही। आत्मा कोई चीज़ बनने की नहीं है। शरीर पहले कितना छोटा फिर कितना बड़ा होता है। कितने ऑरगंस मिलते हैं जिससे आत्मा सारा पार्ट बजाती है। यह दुनिया ही वण्डरफुल है! सभी से वण्डरफुल है बाप, जो आत्माओं को परिचय देते हैं! हम आत्मा कितनी छोटी है। फिर शरीर कैसे बनता है। 7/8 मास का जब होता है तो आत्मा प्रवेश करती है। हरेक चीज़ वण्डरफुल है! जानवर आदि के शरीर कैसे बनते हैं वण्डर है ना! आत्मा तो सभी में वही छोटी है। हाथी कितना बड़ा है उनमें इतनी छोटी आत्मा जाकर बैठती है। बाप तो मनुष्य योनि की बात समझाते हैं। मनुष्य कितने जन्म लेते हैं? 84 लाख जन्म तो है नहीं। समझाया है जितने धर्म हैं इतनी वैराइटी बनती है। हरेक आत्मा कितने फीचर्स का शरीर लेती है। वण्डर है ना! फिर जब चक्र रिपीट होता है तो वही छोटी आत्मा, उनको वही शरीर मिलता है, वही उनका पार्ट रिपीट होता है। हर जन्म में फीचर्स, नाम-रूप आदि बदल जाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कृष्ण काला, कृष्ण गोरा। नहीं। उनकी आत्मा पहले गोरी थी, 84 जन्म लेते-2 काली बनती है। तुम्हारे में भी भिन्न-भिन्न फीचर्स, भिन्न-2 शरीर लेकर पार्ट बजाते हैं। यह भी ड्रामा है। तुम बच्चों को कब भी कोई फिकरात न होनी चाहिए। सभी एक्टर्स हैं। एक शरीर छोड़ दूसरा लेकर पार्ट बजाते हैं। हर जन्म में संबंध आदि बदल जाता है। तो बाप समझाते हैं यह बना बनाया ड्रामा है। आत्मा ही 84 जन्म लेते-2 तमोप्रधान बनी है। अभी फिर आत्मा को सतोप्रधान बनना है। पावन तो ज़रूर बनना है। पावन सृष्टि थी। अभी पतित है, फिर पावन होनी है। सतो॰ और तमो॰ अक्षर तो है ना। सतोप्रधान सृष्टि, फिर सतो रजो तमो बनती है। अभी जो तमोप्रधान बनी है वह फिर सतोप्रधान कैसे बने? यह बरसात की पानी से तो पावन नहीं बनेंगे। बरसात से तो मनुष्यों का मौत भी हो जा(त)ा है। फ़लड्स हो जाते हैं तो कितने डूब मरते हैं। अभी बाप समझाते हैं यह सभी खंड नहीं रहेंगे। सभी डूब मरेंगे। नेचरल कैलेमिटीज़ भी मदद देगी। कितने ढेर मनुष्य, जानवर आदि वह(बह) जाते हैं। ऐसे नहीं कि पानी से पावन बन जाते हैं। वह तो शरीर चला जाता है। शरीरों को तो पतित से पावन नहीं बनना है। पावन बनना है आत्मा को। पतित-पावन तो एक बाप ही है। भल वह जगतगुरु कहलाते हैं; परंतु गुरु का तो काम है सद्गति करना। वह तो एक ही बाप सद्गति दाता है। बाप सद्गुरु ही सद्गति देते हैं। बाप समझाते तो बहुत रहते हैं। यह भी सुनते हैं ना। गुरु लोग भी बाजू में शिष्य को बिठाते हैं सिखाने लिए। यह भी उनके बाजू में बैठा है। बाप समझाते हैं यह लायक है समझने का। तो यह भी समझाते होंगे ना। इसलिए गुरु ब्रह्मा नम्बरवन में आ जाता है। शंकर के लिए तो कहते हैं आँख खोलने से भस्म कर देते हैं, फिर उनको तो गुरु नहीं कहा जाये। फिर भी बाप कहते हैं बच्चों को मामेकं याद करो। कल भी बाप ने समझाया कई बच्चे कहते हैं

इतने धंधे-धोरी आदि की फिकरात में रहते, हम अपन को आत्मा समझ बाप को कैसे याद करें। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग में भी तुम हे ईश्वर, हे भगवान कह याद करते थे ना। याद तब करते हैं जब कुछ दुख होता है। मरने समय भी कहते हैं राम-राम बोलो। बहुत संस्थाएँ हैं जो राम नाम का दान देती हैं। जैसे तुम ज्ञान का दान देते हो, फिर वह कह देते राम बोलो, राम बोलो। तुम भी कहते हो शिवबाबा को याद करो। वह तो शिव को जानते ही नहीं, राम ही कह देते हैं। राम-राम कहना सहज होता है। अभी यह भी क्यों कहते हैं कि राम कहो, जबकि परमात्मा सर्वव्यापी है? बाप बैठ समझाते हैं राम वा कृष्ण को परमात्मा नहीं कहा जाता। कृष्ण भी देवता है। राम के लिए समझाया है वह सेमी देवता है। दो कला कम हो जाते हैं ना। हर एक चीज़ की कला तो कम होती ही है। कपड़ा भी पहले नया फिर पुराना होता है। जैसे कपड़ा धोबी पास जाने से कपड़े की आयु कम होती जाती है ना। तो बाप इतनी बातें समझाते-2 फिर भी कहते हैं मेरे मीठे-2 बच्चों, रूहानी बच्चों अपन को आत्मा समझो। सिमर-सिमर सुख पाओ। यहाँ तो यह दुखधाम है। बाप को और वर्से को सिमरते रहो। याद करते-2 अथाह सुख पावेंगे। कलह-कलेश, बीमारी, रोग आदि जो भी हैं, सभी मिट जावेंगे। तुम 21 जन्मों के लिए निरोगी बन जाते हो। कलह कलेश मिटे सभी तन के जीवनमुक्ति पद पाओ। गाते हैं; परंतु एक्ट में नहीं आते हैं। तुमको बाप प्रैक्टिकल में बैठ समझाते हैं। बाप को सिमरो तो तुम्हारी सभी मनोकमानाएँ पूरी हो जावेंगी। सुखी हो जावेंगे। मोचरा खाकर मानी टूकड़ खाना अच्छा नहीं है। सभी ताजी रोटी ही पसंद करते हैं। आजकल तो तेल ही मिलता है। वहाँ तो घी की नदियाँ बहती हैं। तो बच्चों को यहाँ क्या सुमिरण करना चाहिए? बाबा ऐसे भी नहीं कहते, यहाँ बैठकर बाप को याद करो। नहीं। चलते-फिरते, घूमते शिवबाबा को याद करना है। नौकरी आदि भी करनी है। बाप की याद बुद्धि में रहनी चाहिए। लौकिक बाप के बच्चे नौकरी आदि करते हैं, बाप तो याद रहता ही है ना। कोई भी पूछेगा तो झट बतावेंगे हम किसके बच्चे हैं। बुद्धि में बाप ही(की) प्रोपर्टी भी याद रहती है। तुम भी बाप के बच्चे बने हो। तो प्रोपर्टी भी याद है। बाप को याद करना है। और कोई से संबंध नहीं। आत्मा में ही सारा पार्ट नुँधा हुआ है, जो इमर्ज होता है। इस ब्राह्मण कुल में तुम्हारा जो कल्प-2 पार्ट मिला है, वही इमर्ज होता रहता है। बाप समझाते हैं खाना बनाओ, मिठाई बनाओ, शिवबाबा को याद करते रहो। शिवबाबा को याद कर बनावेंगे तो मिठाई खाने वाले का भी कल्याण होगा। कहाँ भी सा॰ हो सकता है। ब्रह्मा (का) भी सा॰ हो सकता है। शुद्ध अन्न पड़ता है तो ब्रह्मा का, विष्णु का सा॰ कर सकते हैं। ब्रह्मा है यहाँ। ब्रह्माकुमार-कुमारियों का नाम तो होता है ना। बहुतों को सा॰ होते रहेंगे; क्योंकि बाप को याद करते हैं ना। बाप युक्तियाँ तो बहुत बतलाते हैं। वह मुख से राम-राम बोलते हैं। तुमको मुख से कुछ बोलना नहीं है। जैसे वह लोग समझते हैं गुरुनानक को भोग लगा रहे हैं, तुम भी समझते हो हम शिवबाबा के लिए भोग बनाते हैं। शिवबाबा को याद कर बनावेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोग में ताकत हो जाती है। इसलिए बाबा भोजन बनाने वालों को भी कहते हैं शिवबाबा को याद कर बनाओ। लिखा हुआ भी शिवबाबा याद है? याद में रह बनावेंगे तो खाने वालों को ताकत मिलेगी। हृदय शुद्ध होगा। ब्रह्मा भोजन का गायन भी है ना। ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन देवताएँ भी पसंद करते हैं। यह भी शास्त्रों में है। ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन खाने से बुद्धि शुद्ध हो जाती है। ताकत रहती है। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। ब्रह्मा भोजन का जिनको कदर रहता है थाली धोकर भी वह पी लेते हैं। बहुत ऊँच समझते हैं। भोजन बिगर तो (रह) न सके। फ़ैमिन में भोजन बिगर मर जाते हैं। आत्मा ही भोजन खाती है इन ऑरगंस द्वारा। स्वाद लेती है। अच्छा वा बुरा तो आत्मा ने कहा ना। आत्मा है चैतन्य। शरीर ता जड़ है। आत्मा कहती है यह बहुत स्वादिष्ट भोजन है। यह बहुत ताकत वाला है। आगे चलते-2 तुम जैसे-2 उन्नति को पाते रहेंगे वैसे भोजन भी

तुमको ऐसा मिलता रहेगा। इसलिए बच्ची को भी कहते हैं शिवबाबा को याद कर भोजन बनाओ। बाप जो समझाते हैं उसको अमल में लाना चाहिए। तुम हो पियर घर वाले। जाते हो ससुर घर। सूक्ष्मवतन में भी आपस में मिलते हो। भोग ले जाते हैं। देवताओं को भोग लगाते हैं ना। देवताएँ आते हैं, तुम ब्राह्मण वहाँ जाते हो। वहाँ महफिल लगी रहती है। देवता बनते तो तुम ही हो ना; परंतु पहचानें कैसे? तुम बच्चियाँ कहती हो फलासी(फलानी)-2 आई थी। वहाँ मेला लगता है। ध्यान में जाकर तुम रास-विलास भी करते हो। देवताएँ और ब्राह्मण मिलते हैं। नशे में जाते हैं तो देवता बन जाते हैं, फिर उतरते हैं तो ब्राह्मण बन जाते हैं। यह सभी तुमको सा॰ होता है। देवताएँ तो फिर इस रूप में ही आवेंगे ना। तुमको फीलिंग आती है, वैकुण्ठ में जाकर रास-विलास भी करते हो। तो यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं कैसे यह दुनिया बदलती है। बच्चों को अनायास ही सा॰ होते हैं। कोई को सिखाया नहीं जाता है। छोटे-2 बच्चे आपे ही चले जाते थे। यह सभी ड्रामा में पार्ट नुँधा हुआ है। तुम समझते हो फिर 5000वर्ष बाद यह चक्र रिपीट होगा। बहुतों को घर बैठे भी सा॰ होते हैं। बाबा थोड़े ही देखते हैं। अनायास ही जो नूँध है वह सा॰ होता है। यह कोई नई बात नहीं है। तुम जानते हो हम बेहद की पुरानी सृष्टि का सन्यास करते हैं तो नई सृष्टि का मालिक बनते हैं। एक जन्म पवित्र बनने से हम 21 जन्म पवित्र नई दुनिया के मालिक बनते हैं, तो क्यों नहीं पवित्र बनेंगे! कितनी प्रलोभन है! पुरानी सृष्टि तो खत्म होनी ही है तो क्यों न पवित्र बन बाप से हम पूरा वर्सा ले लेवें! यह प्रलोभन है। सन्यासी तो कोई भी प्रलोभन देते नहीं। वह तो कहते हैं सुख काग विष्टा समान है। यह अंतिम जन्म पवित्र बनने लिए यह बच्चियाँ कितनी सितम सहन करती हैं। कामेषु-क्रोधेषु हैं ना। काम की आस न पूरी होने से फिर बहुत मारते हैं। बाप जानते हैं पवित्र दुनिया की स्थापना ज़रूर होनी है। पवित्रता फर्स्ट। मूल बात है कि बाप को याद करो। इस दुखधाम को भूल अपने सुखधाम को याद करते रहो। यह दुखधाम है, ... है ना। सुखधाम में कब कोई मारते नहीं। यह सुखधाम, दुखधाम अथवा मृत्युलोक और अमरलोक का संगम। कितना बार यह चक्र फेरा होगा। हिसाब कर सकेंगे? कितना बार हम सॉलवेंट, इनसॉलवेंट बने हैं? वह भल हिसाब निकालते हों 5000वर्ष में कितने मास, कितने दिन, घंटे, मिनिट, सेकण्ड होते हैं। इनका हिसाब नहीं निकाल सकते। अच्छा, मीठे-2 बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

बापदादा के कमलहस्त लिखत पत्र की कॉपीः– नूरे रत्न आलराउंड प्रति याद प्यार बाद समाचार कि तार पाई कि मुरार जी देसाई ओपनिंग करेंगे। ओपनिंग के पहले गुल्ज़ार और स्वदेश उनको पूरा समझावें। विश्व में शांति इस होवनहार महाभारत विनाश बाद, विश्व में, भारत में दैवी स्वराज्य 5000 वर्ष पहले मिसल कैसे स्थापन हो रहा है, जहाँ विश्व में शांति रहती है। एक राज्य, एक भाषा और विश्व में भारत का राज्य 100% पवित्रता, सुख-संपत्ति का योगबल से स्थापना प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा और ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ द्वारा होता है। हम प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हर 5000वर्ष बाद इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर योगबल और पवित्रता बल से विश्व में शांति कल्प-2 स्थापन करते हैं। अर्थात् कल्प-2 अब संगम युग पर हर 5000वर्ष बाद यह ईश्वरीय सर्विस होती रहती है, जो पुरानी कलियुगी पतित दुनिया से सतयुगी पावन दुनिया की स्थापना होती रहती है। सिद्ध कर बताओ गीता परमपिता ज्ञान का सागर परमात्मा शिव ही साधारण तन द्वारा सीखाते हैं, पढ़ाते हैं, न कि श्रीकृष्ण और पतित पावन पानी न है; परंतु परमपिता परमात्मा ही है, जो कहते हैं काम को जीतो तो जगतजीत बनो। पवित्रता की प्रशंसा की जाती है और जबकि इस पुरानी मृत्युलोक के अंत में विनाश हो नई अमरलोक स्था॰ होती है वा विश्व की बादशाही मिलती है तो क्यों न कोई पवित्रता की प्रतिज्ञा करेंगे वा रखड़ी बंधवावेंगे! सारा मदार पवित्रता पर है। प्युरिटी है तो पीस प्रॉसपेरिटी भी है। ऐसे म्युज़ियम में मंगाये बाण भरो ज्ञान का। लाओ ज़रूर दिखाने और समझाने। भल रात में साथ में घंटा दो लिए ले आओ। लाना ज़रूर उद्घाटन के पहले। नहीं तो (फालतू) ... पड़ता है मिनिम्युज़ियम अगर अच्छा है तो वहाँ ले आओ। राजकुमार के कार वा मितल के कार में; परंतु लाना ज़रूर। ..... फेल होंगे। जब समझे और बोले .....